Volume-11, No. 2 Aug.-2024, pp. Hin.22-26

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों में आध्यात्मिक मूल्य एवं युवा शक्ति का विकास

मिस. कोमल भारती, शोध छात्रा
डॉ.स्वाति सक्सेना, प्रभारी शिक्षाशास्त्र
दयानंद गर्ल्स पी. जी. कॉलेज कानपुर उ.प्र. भारत।
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर उ.प्र. भारत।

भले ही वेदांत कहें या किसी अन्य नाम से पुकारे लेकिन सत्य तो यह है कि धर्म और विचार में विचित्र ही अंतिम शब्द है और उसी दृष्टिकोण से सभी धर्मों व सम्प्रदायों को प्रेम से देखा जा सकता है। हमें विश्वास है कि भविष्य के सभ्य मानव–समाज का यही धर्म है। धार्मिक शिक्षा पुस्तकों द्वारा ना देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिए। जिस देश के पास विचार कि सामर्थ्य अधिक होती है उसकी संस्कृति उतनी ही समृद्ध होती है। भारत देश के सांस्कृतिक कलेवर भौतिकता से मुक्त आत्मा के सामीप को बचाने का कारण बना। भारत में संतों, महात्माओं, विचारों, कलाकारों और समाज सुधारकों ने सत्यम शिवम् सुन्दरम के लिए अपने जीवन को होमकर आदर्शों के मार्ग का निर्माण किया। इतिहास के अमर व्यक्तित्व अपने स्वर्णिम विचार जनता को प्रदान करते है क्योंकि मानव पीढ़ी कृत कृत्य हो जाती है। **स्वामी विवेकानंद** ने सम्पूर्ण शिक्षा कि आधारशिला को रखा, उनका उद्देश्य उसी शिक्षा से था जो चरित्र का निर्माण का सके, मन का बल विकसित हो, बुद्धि का विकास हो, मनुष्य का शारीरिक, मानसिक धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, सौन्दर्यपरक, आर्थिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक, भावात्मक विकास, आध्यात्मिक आनंद, स्वतंत्र विचार, शक्ति निर्णय लेने कि शक्ति, समता मुलांक और सम्पूर्ण समाज, वैश्विक नागरिक के सन्दर्भ में दोनों प्रचलित सम्भाव का प्रचार व प्रसार किया जाता है।

मुख्य शब्द– आध्यात्मिक मूल्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुकरण विधि, याख्यान विधि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मान्यताए आगामी पीढ़ी का मार्गदर्शन करती है, जो सद्गुणों से आध्यात्मिक आनंद कि तृप्ति महसूस कराती है जो बच्चों को शक्तिमान, सहानुभूतिमय साहसी बना देश में सर्वत्र जीवित बचने के सन्देश का, सहायता के सन्देश का, सामाजिक रूप से प्रेरित सन्देश का, समानता के सन्देश का प्रचार करने में सहायक होगा।

स्वामी विवेकानंद केवल एक नाम ही नहीं अपितु स्वंम एक दर्शन है जिसने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। स्वामीजी ने मानव जीवन कि विभिन्न समस्याओं का गहन चिंतन किया। उनके चिंतन का स्थान धर्म, दर्शन, सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली, महिला कि स्थिति, राष्ट्र का सम्मान एवं कई अन्य स्थान थे। विभिन्न समस्याओं पर उनके विचारों ने राष्ट्र को नयी दिशा दी। स्वामीजी का कहना है– शिक्षा आन्तरिक आत्मा कि खोज है, वे शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व् के व्यापक विकास में विश्वास करते है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि– "शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता कि अभिव्यक्ति है सब ज्ञान मनुष्य में निहित है कोई ज्ञान बाहर से नहीं आता अपितु वह सब अंदर हैं।" स्वामीजी ने उन समस्याओं कि पहचान कि जो अन्य समस्त समस्याओं का मूल कारण थी। स्वामीजी का दर्शन लोगों को आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक एवं शारीरिक रूप से परिवर्तित कर देता हैं।

विवेकानंदजी का मानना है,– "शिक्षा को उस जानकारी कि मात्र से नहीं मापा जाता है जो विद्यार्थी को दी जाती है अपितु यह जीवन निर्माण, मानव निर्माण विचारों के चरित्र निर्माण को आत्मसात होना चाहिए।" वे ब्रिटिश कालीन प्रचलित शिक्षा प्रणाली से पूर्ण रूप से असंतुष्ट थे– उन्होंने घोषणा कि थी कि– "हमारे देश की सम्पूर्ण शिक्षा आध्यात्मिक एवं धर्म निरपेक्ष हमारे अपने हाथों में होनी चाहिए और यह राष्ट्रीय तर्ज पर और राष्ट्रीय सरोकारों के माध्यम से जहां तक संभव हो, होना चाहियें, इसलिए सागर, सांसारिक

एवं शाश्वत हमारे अंदर हैं। सारे संसार का ज्ञान एवं शक्तियां भीतर हम जो कुछ भी हैं इसे शक्ति कहते हैं, सर्वशक्तिमान सब कुछ आत्मा में हैं। मनुष्य में ज्ञान और शक्ति पहले से मौजूद है जो मनुष्य करता हैं उसकी खोज ओर अभिव्यक्ति है। स्वामी विवेकानंद का मानना है कि शिक्षा का ढांचा इस प्रकार से डिजाईन किया जाना चाहिए कि व्यक्ति को ये एहसास हो कि उसमें अनंत ज्ञान, शक्ति का निवास है और उस तक पहुचने का साधन है। बाह्य शिक्षक केवल वही सुझाव देता है जो आंतरिक शिक्षक की बात समझने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षा का अंतिम उद्देश्य चरित्र निर्माण है वह शिक्षा कि संरचना का आधुनिकीकरण करना चाहते है। पाश्चात्यविज्ञानों को जोड़कर देखते थे परन्तु आत्मा वेदांत में विचार थे।

विवेकानंद जी के शैक्षिक विचार–

1. विवेकानन्द जी ने छात्र एवं अध्यापक के मध्य व्यक्तिगत संपर्क पर जोर दिया।
2. शिक्षक को चरित्र नैतिकता का सर्वोच्च जीवंत उदाहरण होना चाहिए, उनका मत है कि एकाग्रता के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
3. विवेकानंदजी ने शिक्षक के साथ छात्र के व्यक्तिगत संपर्क पर बहुत जोर दिया, इस कार्य हेतु इन्होनें "गुरु गृहवास" पर बल दिया– बालक को बहुत कम आयु से ही अपने शिक्षक के साथ रहना चाहिये जिसे वह चरित्र और बुद्धि का जीवन्त उदाहरण मानते है।
4. आदर्श शिक्षक के लिए प्रथम आवश्कता पापरहितता है। यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है– "हमें शिक्षक के चरित्र एवं व्यक्तित्व को क्यों देखना चाहिए?" यह आवश्यक है कि जो सत्य हो उसके शब्द मूल्यवान शास्त्रों के जानकार होते हैं, उसे शास्त्रों कि भावनाओं को जानना चाहिए क्योंकि उसके माध्यम से ही विभिन्न शास्त्रों के विचार को सही मायने में महसूस किया जा सकता है।
5. शिक्षक को असीम धैर्यवान एवं सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए क्योंकि केवल इन दो आध्यात्मिक शक्तियों से ही वह अपना ज्ञान प्रदान कर सकता हैं।

शिक्षा का अध्ययन यदि इतिहास कि आँखों से किया जाये तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली को दिशा मिल सकती हैं। इतिहास का परिप्रेक्ष्य शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन के लिए वस्तुनिष्ठता प्रदान करता हैं। शिक्षा के विकास शिक्षा के वंशक्रम और शिक्षा कि संस्कृति के अध्ययन एवं विचार के नए द्वार खोलता हैं। वर्तमान शिक्षा कि जड़ें अतीत में विद्यमान थी। गौरवपूर्ण अतीत से ही शिक्षा का वर्तमान अलौकिक होकर भविष्य के लिए सम्भावनायें प्रदान करता हैं। शिक्षा के वर्तमान युग में पश्चिमीकरण के द्वारा प्राच्य विद्या, भारतीय साहित्य एवं संस्कृति पर कुठाराघात किया जा रहा है। भारतीय मनीषियों कि दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के शरीर मस्तिष्क एवं आत्मा में उत्तम तत्वों का विकास करना हैं। अतः सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक नैतिक एवं अध्यात्मिक विकास कर व्यक्ति में सतगुण, साहस, शक्ति, आत्मानुभव सेवा आदि गुणों का विकास करें।

वर्तमान शिक्षा पद्धति इन उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा शिक्षा का राष्ट्र रुप लेने में असमर्थ रही हैं। हमारी शिक्षा वर्तमान समय में हमारी समाज व्यवस्था एक ऐसी स्थिति में है जहा अधिकांश भारतीय स्वार्थ एवं निराशा का जीवन व्यतीत कर रही है। जहां व्यक्ति जीवन में भ्रांति एवं कलेश से पीडित जब समाज अत्याचार, दुराचार एवं गलत कार्य कि व्याधियों से ग्रस्त है तो राजनीति मनुष्य के जीवन को उभारने संवारने के स्थान पर नष्ट कर रही है। स्वामीजी ने शिक्षा में आध्यात्मिकता एवं भारतीयता के ताने बाने से गुंथे हुए अमृतमय विचार हमेशा अनुकर्णीय है तथा भारतीय जनता में एक नवीन चेतना आत्मविश्वास भरते हैं।

स्वामीजी ने युवा वर्ग के पाठ्यक्रम निर्धारित करते हुए उनमें साहस, आत्मविश्वास, एकाग्रता, अनाशक्ति एवं उच्च नैतिक चरित्र के गुण निर्माण हेतु विशेष ध्यान दिया। उन्होनें शिक्षकों को शिक्षा देने हेतु कार्य को व्यवसाय बनाकर एक मिशन के रूप में लेने कि सलाह दी। उनके शिक्षा संबंधी विचार वर्तमान काल में समकालीन शिक्षा प्रणाली के सुधार हेतु मार्ग–निर्देशक विशेषता थी कि प्रत्येक मनुष्य को उनके विचारों को समझने में किसी प्रकार की समस्या नहीं थी। उनके विचार प्राचीन एवं आधुनिक के समन्वय हैं।

चरित्र ही मानव जीवन का सूत्रधार है जो मनुष्य को बड़े बड़े कार्यों को करने कि शक्ति प्रदान करता है। स्वामीजी ने इस पर ध्यान पूर्वक चिंतन किया जो युवाओं के प्रेरणा स्रोत है, स्वामीजी ने उन मापदंडों के अनुसार हम पूर्णत्व को प्राप्त करके वर्तमान परिप्रेक्ष्य के शैक्षिक विचारों कि उपयोगिता के महत्त्व को समझ कर सफलता कि और अग्रसित हो सकते हैं। स्वामीजी का जीवन भारत के लिए अमूल्य वरदान कि तरह था।

उनका सम्पूर्ण जीवन माँ भारती एवं भारतवासियों कि सेवा हेतु समर्पित था। स्वामीजी प्रथम भारतीय हैं जो देश कि सेवा हेतु समर्पित थे। स्वामीजी प्रथम भारतीय है जिन्होंने देश कि आध्यात्मिकता विशेषता एवं पाश्चात्य देशों कि भौतिक विशेषता से परिचित कराया और अपने भौतिक एवं अध्यात्मिक विकास हेतु सचेत किया। स्वामीजी ने भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में समाजवाद एवं विश्व शांति का दिव्य पाठ का ज्ञान दिया। स्वामीजी के विचार चिंतन और सन्देश प्रत्येक भारतीय के लिए अमूल्य धरोहर है, एवं उनके जीवन शैली और आदर्श प्रत्येक युवा के लिए प्रेरणा स्रोत है। विवेकानंदजी बड़े स्वप्न दृष्टा थे, उन्होंने एक ऐसे समाज कि कल्पना कि थी जिसमें धर्म एवं जाति के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद ना रहे। स्वामीजी चमत्कारिक ज्ञाता थे।

शैक्षिक दर्शन कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी जी कि प्रासिंगकता स्वामीजी के विचार शिक्षा एवं दर्शन में इतने प्रभावी हैं कि उनके द्वारा दिए गए वक्तव्यों में से कोई भी एक वक्तव्य महान क्रांति करने हेतु व्यक्ति के जीवन में अमूल्य परिवर्तन करने में समर्थ है। उनके विचारों से हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति प्रदान होती है। इनके वेदांत दर्शन में जीवन के शाश्वत मूल निहित हैं। स्वामीजी ने वैदिक दर्शन एवं धर्म को पुनर्जीवित करते हुए रामकृष्ण मिशन कि स्थापना की।

स्वामीजी ने भारतीय शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय आदर्शों के आधार पर शिक्षा कि राष्ट्रीय प्रणाली की शुरुआत की जिसमें उन्होंने पश्चिमी नक़ल कि आलोचना की, वह नवीन वस्तुओं कि शुरुआत के पक्षधर थे परन्तु बदलाव के विचारों के खिलाफ थे, उनका तर्क था कि निश्चित रूप से नई चीजें सीखनी है, पेश कि जानी है एवं कार्य करना है। थॉमस (2013) के अनुसार, "शैक्षिक उद्देश्य सामग्री और शिक्षण के तरीके और वास्तव में शिक्षा की पूरी प्रक्रिया इन स्तंभों– धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और लोकतंत्र पर आधारित होनी चाहियें। स्वामीजी के अनुसार, शिक्षण कि विधियाँ है–

ध्यान एकाग्रता विधि
ब्रम्हचर्य युग
चर्चा और चिंतन विधि
अनुकरण विधि
व्यक्तिगत मार्गदर्शन और परामर्श गतिविधि
व्याख्यान विधि

उनके अनुसार पाठयक्रम में वेदांत, धर्म और दर्शनशास्त्र, विज्ञान इंजीनियरिंग एवं तकनीकी विषयों के अध्ययन शामिल हैं। स्वामीजी कहते हैं, "हम ऐसी शिक्षा चाहते है जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढे, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति अपने पैरो पर खडा हो।" उन्होंनें जोर देकर कहा कि उच्च वर्गों का कर्त्तव्य था, जिन्होंने गरीबी की कीमत पर अपनी शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य हैं शारीरिक विकास, मानसिक विकास, चारित्रिक विकास, एकाग्रता के लिए, ब्रम्हचर्य का पालन, व्यावसायिक उद्देश्य, व्यक्तित्व का विकास, स्वयं में विश्वास, श्रद्धा का विकास, त्याग कि भावना का विकास एवं सार्वभौमिक भाईचारे को बढावा देना। स्वामीजी ने भौतिकवादी पाश्चात्य समाज में आध्यात्मिक योग एवं वेदांत शिक्षा के प्रभाव पर बोला हैं। स्वामीजी के चिंतन में दलितों, महिलाओं व् गरीबों के उत्थान तथा 'कर्म कि प्रधानता का विचार' विशेष रूप से उपस्थित रहा। भौतिक विज्ञान केवल लौकिक समृद्ध दे सकता है परन्तु अध्यात्म विज्ञानं शाश्वत जीवन के लिए है। यदि शाश्वत जीवन न भी हो तब भी अध्यात्मिक विचारों का आदर्श मनुष्य को अधिक आनंद देता है, अधिक सुखी बनाता है लेकिन जड़वाद की अन्तता ही स्पर्धा, अयोग्य तीव्र अभिलाषा एवं व्यक्ति तथा राष्ट्रीय की अंतिम मृत्यु का साधन होती है। वर्तमान युग में युवाओं के लिए कृषि, कताई, एवं बुनाई, कीबोर्ड लकड़ी व धातु का कार्य, मातृभाषा जैसे विषयों पर ज्यादा रूचि नहीं रखते। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन (सामाजिक पर्यावरण एवं आर्थिक वातावरण, सरकारी पर्यावरण एवं भौतिक पर्यावरण) सामान्य विज्ञान प्राकृतिक अध्ययन, प्राणी अध्ययन, शारीरिक विज्ञान जैसे अन्य विषयों के साथ शामिल किया जाना चाहिये। प्राथमिक शिक्षा में स्वच्छता, पोषण अपना कार्य स्वयं करना, माता पिता के सहायक बनना आदि प्राथमिक सिद्धांत में शामिल होना आवश्यक हैं।

भारत में शिक्षा नीति 2020 स्वामी जी की दूरदर्शी शिक्षाओं का एक उल्लेखनीय प्रतिबिम्ब बनकर उभरी हुई है जो पुरे विश्व के शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में कार्य कर रही है जो ज्ञान और आध्यात्मिकता के प्रति स्वामी जी की शिक्षा को व्यक्तिगत और सामजिक परिवर्तन की कुँजी के रूप में देखा। उनकी दूरदर्शी शिक्षाएं राष्ट्रीय

शिक्षा नीति 2020 में भी प्रतिनिधित्व होती हैं जो भारत के शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। एन. ई. पी. स्वामी विवेकानंद जी की गहन अंतर्दृष्टि से प्रेरित एक रोडमैप की तरह कार्य करती है। एन. ई. पी. और स्वामी विवेकानंद द्वारा निर्धारित दूरदर्शी शैक्षिक सिद्धांतों के बीच सामजस्यपूर्ण संरक्षण को उजागर करते हैं।

समग्र विकास– स्वामी जी का समग्र विकास पर गहरा जोर, जिसमें शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक आयाम शामिल है, एन. ई. पी. के मूल सिद्धांतों के साथ सहज रूप से संरक्षित है नीति एक समग्र शैक्षिक अनुभव विकसित करने का प्रयास करती है जो व्यक्तिगत विकास के लिए स्वामी जी के समग्र दृष्टिकोण को प्रतिध्वनित करती है। स्वामी जी और एन. ई. पी. दोनों ही एक ऐसी शिक्षा के वकालत करते है जो साम्जस्यपूर्ण और संतुलित विकास को बढावा देती है।

समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा– स्वामी जी की शिक्षा समावेशी की दृष्टि जिसका उद्देश्य समाज के हर व्यक्ति तक पहुंचना है समावेशी और न्याय संगत शिक्षा के प्रति एन.ई.पी. की प्रतिबद्धता के साथ शक्तिशाली रूप से प्रतिनिधित्व होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करती हैं विशेष आवश्यकताओं की शिक्षा के प्रावधान पर जोर देती है जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यापक रूप से सभी सुनिश्चित रूप से पहुँच सके।

भारतीय मूल्य और विरासत को बढावा देना– स्वामी जी और एन. ई. पी. दोनों ही भारत के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने के महत्त्व को रेखांकित करते हैं। एन.ई.पी. देश की सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विरासत को पाठ्यक्रम में एकीकृत करती है। स्वामी जी ने भारत के मूल्य और विरासत को संरक्षित करने और बढावा देने के बारे में भी कहा है।

आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य– स्वामी जी ने आध्यात्मिक मूल्यों पर विशेष जोर दिया है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी मूल्य आधारित शिक्षा का आहवान करती है। इस नीति का उद्देश्य और स्वामी जी का उद्देश्य नैतिक मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को प्रत्येक युवाओं के ह्रदय में जागृत करना है। शिक्षा और चरित्र विकास के बीच अभिन्न सम्बन्ध पर स्वामी जी की शिक्षाएं नैतिक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यक्तियों के पोषण पर एन.ई.पी. के फोकस के साथ दृढ़ता से प्रतिध्वनित होती है।

स्वामी जी ने युवाओं को आध्यात्मिक संघान पर जाने की बात कहीं जिससे न केवल उन्हें अपना लक्ष्य पाने में आसानी होगी बल्कि वह जीवन में महानतम लक्ष्य बना सकेंगे। उन्होंने साफ कहा कि जीवन बहुत छोटा लेकिन अजर–अमर है, इसलिए अपने जीवन को बड़े लक्ष्य की प्राप्ति में लगा दो। स्वामी जी ने युवाओं को चार क्षेत्रों में विशेष ध्यान रखने को कहा उनके माध्यम से व्यक्ति और राष्ट्र के सामूहिक चेतना को जागृत करना चाहते थे, उन्होंने इस भारत को सभ्यागत मूल्यों पर पूरी आस्था बनाए रखने को कहा यदि युवाओं से राष्ट्र के निर्माण की अपील की उनके सपनों का भारत एक ऐसी भूमि और समाज था जहा मानव मात्र का सम्मान और स्वतंत्रता होने के साथ–साथ प्रेम सेवा और शक्ति का भाव भी रहे। स्वामी विवेकानंद ने सिर्फ शिक्षा और उपदेश नहीं दिए बल्कि उन्हें जीवन में सबसे पहले उतारा। स्वामी जी ने अपने आध्यात्मिक चेतना के साथ–साथ अपनी सामाजिक चेतना को भी जागृत रखा और समाज का काम करते रहे। स्वामी विवेकानंद अपने विचारों, आदर्शों, और लक्षण की वजह से आज भी बहुत प्रासंगिक है, उन्होंनें युवाओं को शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संघान के माध्यम से उन्हें प्राप्त करने का तरीका बताया– आज का युवा इसे किसी एक मार्ग पर चलकर शांति, समृद्धि आनंद को प्राप्त कर सकता है।

वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षा कि अवधारणा भारतीय शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विरासत एवं राष्ट्रीय आदर्शों के आधार पर शिक्षा की एक राष्ट्रीय प्रणाली कि शुरुआत होनी चाहिये जिसमें बालक–बालिकाओ में सर्वश्रेष्ठ को शिक्षित करने एवं परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के लिए तैयार करना हैं। सच्ची शिक्षा वह है जिससे शब्द संचय नहीं, क्षमता का विकास संभव होता है या फिर व्यक्तियों को ऐसे प्रशिक्षित करना की वे सही दिशा में दक्षता पूर्वक अपनी संकल्प शक्ति का विकास कर सके।

स्वामी विवेकानंद जी के विचार आज भी पूर्णता नए ही प्रतीत होते हैं। जो शिक्षा के क्षेत्र में सेतु की तरह कार्य करते है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मानवीय एवं अध्यात्मिक मूल्यों की गिरावट आई है हम स्वामीजी के शैक्षिक विचार के द्वारा युवाओं को भली–भांति जागृत कर सकते है। मानव निर्माणकारी शिक्षा वर्तमान परिदृश्य में

अत्यंत आवश्यक है। अतः हम कह सकते है कि स्वामीजी ने मानवीयता, आध्यात्मिकता से परिपूर्ण युवाओं के लिए जिस शिक्षा की वकालत की हैं वह आज के समय की अटूट आवश्यकता के रूप में सिद्ध हो सकती हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. पाण्डेय, राम शकल (1999)– "विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
2. पाण्डेय राम शकल (1978)– "शिक्षा के सैधांतिक आधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
3. शर्मा आर. ए. (2009)– "शिक्षा के दार्शनिक विचार एवं सामाजिक मूल आधार", आर. लाल बुक डिपो मेरठ
4. स्वामी विवेकानंद (1998)– "द कम्पलीट वर्क्स ऑफ़ स्वामी विवेकानंद, 5 डी ही अंटाली रोड कलकत्ता
5. अभयंकर एस.बी (1987)– "ए कम्परे टिव इन डीटथ एंड क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ़ स्वामी विवेकानंद
6. भारती और भास्कर राव (2004)– "स्वामी विवेकानंद और जॉन डी.वी .का शैक्षिक दर्शन" ए. पी. एच. पब्लिकेशन्स नई दिल्ली
7. अग्रवाल जे. सी (2008)– "उभरते भारतीय समाज में शिक्षा" शिप्रा प्रकाशन नई दिल्ली
8. सरित सुशील एवं भार्गव अनिल (2004)– "आधुनिक भारतीय शिक्षा विदो का चिंतन" वेदांत पब्लिकेशन्स, भार्गव बुक हाउस आगरा
9. राय एस.डी. (2001)– "स्वामी विवेकानंद कि दृष्टि में शिक्षा" नई दिल्ली
10. शर्मा मधुसुदन (2017)– "स्वामी विवेकानंद, नई सदी बुक हाउस ए–7 कमर्शियल काम्प्लेक्स डॉ. मुख़र्जी नगर दिल्ली
11. मराल मिश्र गारगी शरण (2013)– "संस्कार शिक्षा"– विकास प्रकाशन 311 सी विश्व बैंक बर्रा कानपुर
12. गुप्ता, शुभम (2022)– "जीवनी स्वामी विवेकानंद" प्रभाकर प्रकाशन पांडव नगर ईस्ट दिल्ली